Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 3 | MARCH 2024

" वर्तमान परिदृश्य में लोकतंत्रात्मक प्रणाली में शांति शिक्षा का महत्व : एक आलोचनात्मक चिंतन "

सुरेश कुमार [1]

[1] पूर्व सहायक आचार्य-राजनीति विज्ञान, राजकीय कन्या महाविद्यालय(राजसेस अधीन) शिवगंज, जिला सिरोही

ABSTRACT:

आज हम 21वीं सदी के सर्वोत्कृष्ट विज्ञान की सफलता को प्राप्त कर चुके हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास ने मानव जीवन को क्रत्रिम से भरपूर जीवन में लिप्त कर रखा है। आज के युग में नैतिक मूल्यों को भुलाकर हम मस्तिष्क की उपलब्धियों पर अधिक बल दे रहे हैं। जिसका सीधा प्रभाव हमारे लोकतंत्र पर पड़ रहा है। जिसमें हर पहलू पर मूल्य विहीनता परिलक्षित होती है। इसका सर्वविदित कारक है आधुनिकीकरण। आज विज्ञान ने मनुष्य को भौतिकवादी एवं उपयोगितावादी वातावरण में येन-केन-प्रकारेण सुखी जीवन की ओर उन्मुख कर दिया, इसके ठीक विपरीत प्रत्येक देश सीमित असीमित, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से आतंकवाद, नक्सलवाद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद, गरीबी, अशिक्षा इत्यादि समस्याओं से ग्रस्त है जिसका मुख्य कारणा 'शांति मूल्यों की कमी है। दो विश्व युद्ध हो चुके हैं और तीसरे विश्व युद्ध की ओर विश्व प्रस्थान करता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा है। जिस साम्यवाद, पूँजीवाद एवं विजय लोलुपता ने संसार को महायुद्ध के रक्तपात तथा विभीषिकाओं में डुबो दिया वह "मस्तिष्क का विकार था आत्मा का नहीं। यह सत्य है कि शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा (Body, Mind & Soul) तीनों के स्वाभाविक सामंजस्य के निर्वाह से ही व्यक्ति और राष्ट्र सुखी हो सकते हैं। अतः वर्तमान परिदृश्य में लोकतंत्रात्मक विकास और सुदृढ़ीकरण के लिए सभी मानवों के आपसी प्रेम, सहयोग, एवं शांतिपूर्ण जीवन-यापन करने हेतु "शांति शिक्षा" अनिवार्य एवं समीचीन है।

लोकतन्त्र में ' शांति शिक्षा ' को परिवार से शुरू होकर, स्कूल कॉलेज, विश्वविद्यालय एवं समाज के प्रत्येक नागरिक को सकारात्मक पक्ष को व्यवहार में उतारना होगा तभी समावेशी विकास होगा। शांति शिक्षा को एक ' जीवन शैली ' (Life Style) के रूप में अपनाना होगा तभी अंतर्राष्ट्रीय समाज में शांति का निर्माण होगा और हमारा लोकतंत्र बल, कौशल, सौंदर्य, सौहार्द, सामाजिक, सांस्कृतिक व मानवीय गुणों से संपृक्त होगा। इस वातावरण को बनाने के लिए शांतिशिक्षा का महत्त्व सर्वोपरि है।

KEYWORDS:

वर्तमान परिदृश्य, लोकतंत्रात्मक प्रणाली, शांति शिक्षा, समाज, प्रौद्योगिकी, विकास, नैतिक मूल्य।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
19th March 2024	21st March 2024

प्रस्तावना:-

लोकतन्त्र के चार प्राण तत्व स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व एवं न्याय हैं, जिसके बिना व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। लोकतन्त्र के विभिन्न स्वरूप-राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक हैं, जिसमें लोकतन्त्र ' नैतिक स्वरूप ' निरन्तर ह्रास की ओर है। जिसके कारण लोकतन्त्र में राजनीतिक पक्ष पर अंगुली उठने लगी हैं। लोकतन्त्र अपने व्यापक अर्थ में केवल वोट देना, सरकार बनाना, सरकार चलाना या जातिवाद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद, वंशवाद, परिवारवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद, धनबल एवं बाहुबल के बल पर सत्ता प्राप्त करना ही नहीं है, बल्कि इसमें लोकतन्त्रीय नागरिक चिंतन, व्यवहार, जीवन पद्धति, शिक्षा, कौशल, मौलिक कर्तव्य (Fundamental Duties) समाज, मूल्य एवं नैतिकता आदि सुविचार शामिल हैं। लोकतन्त्र का आधार व्यक्ति का नैतिक बल ही है जो सही-गलत, उचित अनुचित, ईमानदारी, प्रेम, सद्भाव आदि का व्यावहारिक रूप से पालन कराता है। यदि लोकतन्त्र को सफल एवं सुदृढ़ करना है, तो लोगों में नैतिक एवं मानवीय गुणों का विकास करना होगा, उनके चारित्रिक उत्थान पर जोर देना होगा जो केवल शांति शिक्षा (Peace Education) से ही संभव है।

शांति शिक्षा की अवधारणा:-

शान्ति शिक्षा का सम्बन्ध मानव विकास से है। आज सम्पूर्ण मानवता एक चौराहे पर खड़ी है और यह तय नहीं कर पा रही है कि कौन सा रास्ता सही है। इस क्षेत्र में शान्ति शिक्षा एक ऐसी अवधारणा है जिसमें मानवीयकरण के माध्यम से व्यक्ति में हिंसा की प्रवृत्तियों को नियंत्रित किया जाता है। उसे दुर्गुणों से विमुख कर सद्भाव की ओर उन्मुख किया जाता है। अतः एक शान्ति शिक्षा ही उनका मार्गदर्शन करने के लिए उपयुक्त है जो सद्मार्ग से विचलित हो गये हैं। शान्ति शिक्षा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र सामाजिक, वैयक्तिक, चारित्रिक, नैतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक आदि में किस प्रकार व्यवहार किया जाये से सम्बन्धित शिक्षा प्रदान करती है। शांति शिक्षा वह शिक्षा है जो अशोषित (Non- exploitative) अहिंसक (Non-violent) तथा न्यायप्रिय समाज का निर्माण करती है। कुछ शिक्षाविद ' शांतिशिक्षा ' को इसप्रकार परिभाषित करते है:-

के०एस० बासवराज कहते हैं कि, " शांति शिक्षा एक कार्यक्रम एवं प्रक्रिया है। जिससे लोगों (नवयुवक तथा प्रौढ़ों) में शांति के मूल्य की सराहना तथा समझदारी की भावना का विकास किया जाता है। वह तैयारी है जिससे सामुदायिक जीवन को न्यायप्रिय, व्यवस्थित तथा सामंजस्यपूर्ण बनाया जाता है।"

डॉ० मर्सी अब्राहम के अनुसार " शांति शिक्षा शांतिप्रिय लोगों के लिए शिक्षा है जो कि इस पृथ्वी पर शांति कायम करने के योग्य होंगे। यह विशेषतः भावात्मक शिक्षा है यह आर्थिक शिक्षा है। साथ ही यह स्वयं में शिक्षा है।"

वैश्विक परिप्रेक्ष्य पर यदि विचार करें तो शान्ति युद्ध और वैश्विक कलह की अनुपस्थिति में है। 20वीं शताब्दी में दुनिया ने दो विभीषक विश्व युद्धों को देखा। द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45) में त्रस्त मानव जाति के सम्मुख संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे वैश्विक संगठन ने शान्ति की एक नयी उम्मीद रखी। वर्तमान समय में शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व कायम रखने के लिए 193 देश संयुक्त राष्ट्र के सदस्य हैं। इस संगठन ने राष्ट्रों के मध्य होने वाले विभिन्न विवादों को शान्ति पूर्वक समाधान करने का एक मंच प्रदान किया है। शान्ति स्थापना हेतु विभिन्न राष्ट्रों द्वारा कई शान्ति सन्धियां एवं समझौते किये गये हैं। वर्तमान विश्व में सर्व-स्वीकार शासन प्रणाली के रूप में लोकतन्त्र ने भी वैश्विक शान्ति स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और यह आवश्यक भी है। क्योंकि सद्वृत्तियां मानव को सौम्य व्यवहार की ओर आकर्षित करती हैं। अतः महान व्यक्तित्व गौतम बुद्ध जी कहते हैं कि, "व्यक्ति खुद ही अपना सबसे बड़ा रक्षक हो सकता है, और कौन उसकी रक्षा कर सकता है? अगर आपका खुद पर पूरा नियंत्रण है, तो आपको वह क्षमता हासिल होगी जिसे बहुत ही कम लोग हासिल कर पाते हैं। इसप्रकार

महात्मा बुद्ध ने मूल रूप से मूल्यों पर ही जोर दिया है।

वास्तव में शान्ति एक सार्वभौमिक आवश्यकता है जो मानव जाति के लिए अपरिहार्य है। और लोकतंत्र के सुदृढ़ीकरण के लिए शान्ति शिक्षा के माध्यम से ही एक बेहतर परिवेश का निर्माण किया जा सकता है जिसमें मानव जाति शान्ति एवं भाईचारे के साथ रहे। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों के विद्वान अपने शिक्षक कार्य द्वारा शान्ति स्थापना की प्रक्रिया में योग देते है। समाजशास्त्री अपनी कक्षा में हिंसा एवं संघर्ष के सामाजिक कारणों पर चर्चा करते है। राजनीति शास्त्री वैश्विक संगठन को परिभाषित करते है और समझाते है कि, कैसे वैश्विक समस्याओं का समाधान इनके द्वारा निकल सकता है। मनोवैज्ञानिक मानव मस्तिष्क की उस मानसिक प्रवृत्ति का अध्ययन करते है जो हिंसा के व्यवहार को बढ़ाती है। इतिहासकार शान्ति आन्दोलनों के बारे में लिखते एवं पढ़ाते है। साहित्यकार उन साहित्य एवं कलाओं को प्रदर्शित करते है जो शान्ति के प्रति प्रतिबद्ध है। इस प्रकार सभी विषयों के विद्वान शान्ति स्थापना के क्षेत्र में अपने शिक्षण कौशल द्वारा योगदान देते है। जिनका सहयोग हर ओर से एक ही चादर को आकार देता हुआ प्रतीत होता है और वो है लोकतंत्र का सौंदर्य आवरण।

वर्तमान परिदृश्य

आज प्रायः देखा जा रहा है कि नक्सलवाद, आतंकवाद, ने समाज से शांति को छीन लिया है। घर, परिवार, शहर, राज्य एवं देश में विवाद, कलह बढ़ता ही जा रहा है। लोकतंत्र में समानता, स्वतंत्रता के विपरीत, अस्पृश्यता, जातिवाद, सम्प्रदायवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। लोकतंत्र में नागरिक अमन-चैन से रहते हैं, लेकिन मूल्यपरक शिक्षा के अभाव में येनकेन प्रकारेण अपने स्वहित को पूरा करते है, जो लोकतंत्र के विपरीत है। 'तंत्र' तो सही है, लेकिन 'लोक' पतित होता जा रहा है। इसके अलावा युवा वर्ग में नशाखोरी, हिंसा की बढ़ती प्रवृत्ति, सत्तासुख हेतु विविध प्रपंच और भौतिकवादी संसाधनों से लैस होने के लिए अनैतिक कार्य करने से नहीं डरते। तमाम पुलिस प्रशासन की चौकसी के बाद भी बलात्कार, छेड़कानी का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। इसके मूल में 'नैतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा का अभाव है। जब तक हम शिक्षा के माध्यम से मानसिकता नहीं बदलेंगे, समाज में सुकर्म हेतु जनमत नहीं बनायेंगे, तब तक समाज में शांति नहीं स्थापित हो सकती है एवं स्वस्थ लोकतंत्र को साकार नहीं किया जा सकता है।

आज वही भारत जातिवाद, सम्प्रदायवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद एवं क्षेत्रवाद से ग्रस्त होकर शांति के लिए तड़प रहा है। सबसे दुःख की बात यह है कि इन शांति विरोधी क्रियाकलापों में नवयुवकों की सबसे ज्यादा भागीदारी हे। आज का युवा भटकत्ता दिख रहा है, एवं छात्रों में भी हिंसा की प्रवृत्ति बढ़ी है। जहाँ शिक्षा के मंदिर में प्रोफेसर की हत्या हो रही है। इन सब के मूल में कहीं न कहीं आदर्श शिक्षा का अभाव है, जिसके कारण ये लोग समाज विरोधी कृत्य में लगे हैं। शांति की स्थापना 'शिक्षा', सद्भाव एवं आपसी प्रेम से ही संभव है, बल प्रयोग से नहीं। अमेरिका आर्थिक, सामरिक, राजनीतिक एवं परमाणु बम से लैश है, उसकी तूती पूरे विश्व में बोल रही है, फिर भी वह 'आतंकवादी घटना का शिकार हो गया, क्योंकि उसकी नीति भेदभावपूर्ण है। जब तक हम समाज में शिक्षा के माध्यम से मूल विषमता के तह तक नहीं जाएंगे, जीवन मूल्यों, नैतिक आदर्शों को मानव सभ्यता से नहीं जोड़ेंगे शांति स्थापना एक दिवास्वप्न ही रहेगी। समाज विरोधी, राष्ट्रविरोधी कार्यों में लिप्त लोगों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक एवं भौगोलिक कारणों पर गहन विचार, विश्लेषण एवं शोध की आवश्यकता है, ताकि समस्याओं से रूबरू होकर सकारात्मक पहल कर समाजकी मुख्य धारा से इन लोगों को जोड़ना होगा, तभी जाकर भारत अपने 'अतीत के गौरव' को सुरक्षित रख सकता है एवं व्यवहार में भी गर्व से कह सकता है कि भारत लोकतांत्रिक देश का आदर्श प्रतिमान है।

लोकतंत्रात्मक प्रणाली में शांति शिक्षा की आवश्यकता

शिक्षा के दार्शनिक पक्ष, सकारात्मक पक्ष को मजबूत कर नैतिक मूल्य को बढ़ावा देना होगा ताकि आज के बच्चों में दुष्पवृत्ति न पनपे और शान्त भारत का निर्माण हो। 'सम्पूर्ण पृथ्वी एक देश है और समस्त मानव जाति इसके नागरिक हैं (The Earth is But One Country and Mainkind its Citizens)

लोकतंत्र के सुदृढ़ीकरण के लिए शांति शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है। क्योंकि यही वह शिक्षा है जो मानव में मूल्यों का अवरोपण करती है और मूल्य ही मानव में नैतिक गठन करते हैं। मानव चाहे कितना भी साधनसम्पन्न हो जाएं, सारी सुविधाएं उपलब्ध हों फिर भी यदि परिवार में 'शांति' न हो, कलह, आपसी मतभेद चरम पर हो, तो सब सुविधा बेकार, अर्थहीन एवं गौण हो जाते हैं। यदि परिवार में शांति होगी तो स्वस्थ लोकतांत्रिक समाज का निर्माण होगा एवं स्वस्थ समाज से उन्नत, सम्मानित राष्ट्र का निर्माण होगा, क्योंकि सम्मानित व्यक्ति से ही स्वस्थ समाज, गौरवमयी राष्ट्र, आदर्श परिवार, प्रगतिशील व शांत विश्व का समाजशास्त्रीय चक्र अनवरत चलता रहता है। यह निरन्तरता शांति शिक्षा द्वारा ही संभव है।

'शिक्षा' के बारे में कहा जाता है कि यदि परिवार में एक महिला शिक्षित होती है, तो पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है और अशिक्षित महिला पूरे कुल को बर्बाद कर अशान्ति के गर्त में डाल देती है। शिक्षित मानव अपने कर्तव्य का पालन कर दूसरे का अधिकार सुरक्षित रखता है, जिससे समाज में सामंजस्य कायम रहता है।

एवं लोकतंत्र सफल होता है, क्योंकि जो आतंकवादी, नक्सलवादी समाज में हिंसा, दंगा-फसाद को बढ़ावा देते हैं, वे निश्चित रूप से नैतिक शिक्षा से वंचित होते हैं। उनमें शुरू से ही मस्तिष्क में दुष्प्रवृत्ति का बीजारोपण कर दिया जाता है, क्योंकि 'मस्तिष्क कोरा कागज' होता है। कहा भी जाता है कि 'जैसा खाओं अन्न, वैसा हो मन' और स्वस्थ्य शरीर वातावरण में स्वस्थ शांत मस्तिष्क का विकास होता है। यदि लोकतंत्र में दिल से आस्था हो तो कोई अनैतिक कार्य नहीं करेगा। मन में आध्यात्मिक ऊर्जायें हों, हृदय कोमल भावनाओं से अनुप्राणित हो, व्यक्तित्व नैतिक सामाजिक, सांस्कृतिक व चारित्रिक गुणों से मण्डित हो तो परिवार से लेकर राष्ट्र तक सब कुछ गौरवशाली होगा। जिसकी गूंज सुदूर नभ तक जायेगी।

वास्तव में यदि देखा जाए तो भारत हमेशा से शांति, सहयोग का हिमायती रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूरा विश्व शीत युद्ध (Cold War) में शामिल था तो भारत ने 'गुट निरपेक्ष आंदोलन' खड़ा किया जो किसी गुट (सोवियत संघ, अमेरिका) में शामिल नहीं हुआ। यदि स्वतंत्रता संघर्ष पर दृष्टिपात करें तो विदित होता है कि गाँधी जी का पूरा आंदोलन (गाँधी युग) 'अहिंसात्मक' रहा है, जिसमें हिंसा का कोई स्थान नहीं था, चाहे वह वैचारिक एवं व्यावहारिक हो। भारत को शांति, सद्भाव के क्षेत्र में आध्यात्मिक गुरु माना जाता है, क्योंकि भारत, भगवान महाबीर, बुद्ध की कर्मस्थली है, जहाँ हिंसा का कोई स्थान नहीं है। आज उसी शांतिपूर्ण उत्कृष्ट वातावरण को पुनः स्थापित करने के लिए शांति शिक्षा की आवश्यकता है।

लोकतंत्रात्मक प्रणाली में शांति शिक्षा का महत्व

21वीं सदी उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण, औद्योगीकरण, सूचना तकनीकी, भूमण्डलीकरण एवं विज्ञान-अंतरिक्ष के दौर से प्रगतिशील एवं गतिशील है। विश्व हर ओर आर्थिक क्षेत्र में ऊँचाईयों को स्पर्श कर रहा है और चिकित्सा क्षेत्र की प्रगति ने नागरिकों की औसत आयु में वृद्धि कर दी है। वहीं दूसरी ओर हथियारों की होड़ में मिसाइल, रासायनिक, जैविक हथियार एवं परमाणु बम के युग में आतंकवाद ने पूरे विश्व से 'शान्ति' को छीन लिया है, तानाशाही बढ़ती जा रही है। पूरा विश्व अपने को असुरक्षित महसूस कर रहा है और शांति, सुरक्षा, सहयोग के लिए प्रयत्नशील है। भारत भी आतंकवाद, नक्सलवाद के साथ ही जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, छात्रों में बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति, जनसंख्या विस्फोट, राजनीति का अपराधीकरण एवं भ्रष्टाचार से ग्रस्त त्रस्त है। इससे उबरने का प्रयास कर रहा है परन्तु परिणाम 'ढाक के तीन पात हैं। इसके मूल में शिक्षा का अभाव है। शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली ऐसी प्रक्रिया है, जिससे मानव के व्यवहार में परिवर्तन आता है और समायोजन की क्षमता प्रदान करती है। आज संयुक्त राष्ट्र शांति, सुरक्षा एवं सहयोग को बढ़ावा दे रहा है एवं मानवाधिकारों के समुचित उपयोग के लिए कृतसंकल्प है। यह कारगर कार्य लोकतांत्रिक देश में ही संभव है इसलिए स्वस्थ लोकतंत्र की स्थापना तभी होगी जब नागरिकों को शांति शिक्षा दी जाए, जिससे चारित्रिक उत्थान हो सके। मूल्यपरक 'शिक्षा' से ही चारित्रिक सुदृढ़ता व नैतिक आचरण की बुनियाद खड़ी होती है, जो शान्ति के लिए अनिवार्य तत्त्व है।

इन सभी दृष्टियों से शांति शिक्षा का महत्व लोकतंत्रात्मक प्रणाली में एक अहम भूमिका का निर्वहन करता है। वास्तविकता में समस्त वैश्विक वातावरण में, भावनाओं में, प्रकृति में, विश्व के प्रत्येक कोने में शांतिमूल्यों की स्थापना करने के लिए आज शिक्षा में शांति की आवश्यकता है। क्योंकि जब शांति शिक्षा बचपन से ही बालकों के साथ जुड़ेगी और उनमें मूल्य का अवरोपण किया जाएगा तो चरणबद्ध तरीके से हमारा लोकतंत्र सुदृढ़ होगा, सुखमय होगा, स्वस्थ होगा, सौहार्द से परिपूर्ण होगा और सौंदर्य युक्त होगा। लोकतंत्र के इस स्वरूप की परिपूर्ति के लिए हमें ऋषि सभ्यता के वातावरण को अपनाना होगा जो शांति शिक्षा के मूल्य से मंडित था।

निष्कर्ष

विश्व के सभी देशों की तुलना में विशाल जनसंख्या वाला, नाभिकीय क्षमता से युक्त, आर्थिक-औद्योगिक संसाधन, सांस्कृतिक विरासत एवं विशेषता से परिपूर्ण, अनेकता में

एकता, वसुधैव कुटुम्बकम, सहयोगपूर्ण विकास तथा शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व और अन्तर्राष्ट्रीय शांति को संकल्पित भारत, शिक्षा के माध्यम से निश्चित ही विश्व मानवता के लिए आदर्श बनेगा। जब आदर्श लोकतंत्र की स्थापना हों, नागरिकों को शांति शिक्षा के लिए प्रेरित किया जाय ताकि राजनीतिक मूल्य, नागरिक कर्तव्य को व्यावहारिक रूप प्रदान करें, जो लोकतंत्र के सुदृढ़ीकरण में सहायक होगा।

अंत में कहा जा सकता है कि, भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है लेकिन व्यावहारिक रूप में 'भ्रष्टाचार' ने उसे इस तरह जकड़ लिया है कि आम आदमी का विश्वास संस्थाओं से उठता जा रहा है, भ्रष्टाचार साधन सम्पन्न लोगों का हथियार बनता जा रहा है। आज के वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी भ्रष्टाचार के विरूद्ध कई कड़े कदम उठा रहे हैं, जिसमें मुद्रा का विमुद्रीकरण एक गम्भीर चुनौती बनी हुई है। स्वस्थ लोकतंत्र की सफलता साधनों की पवित्रता एवं चरित्र की उत्कृष्टता' पर निर्भर है जो शांति शिक्षा से ही संभव है। आज देश डॉ० कलाम के विजन 2020, विकसित भारत का मिशन लेकर चल रहा है। ऐसे में नक्सलवाद, आतंकवाद, गुर्जर सरीखे आन्दोलन बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। अतः, शांति के लिए शिक्षा द्वारा ही नक्सलवाद, आतंकवाद और गुर्जर सरीखे आन्दोलन एवं युवाओं में दुष्प्रवृत्ति को समूल नष्ट करने के उपाय करने की आवश्यकता है, तभी भारत सशक्त आर्थिक शक्ति बनकर उभरेगा और विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा होकर सोने की चिड़िया की खोई प्रतिष्ठा को पुनः प्रतिस्थापित कर सकेगा।

REFERENCES

1. बार्कर अर्नेस्ट एवं गुप्त, विश्व प्रकाश-यूनानी राजनीति सिद्धान्त (प्लेटो और उसके पूर्ववर्ती), अनुवाद निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1967.

2. S. Indra Devi, 'Human Rights and Personal Laws', Souvenir National Seminar on Human Rights and Children, 10-11 December, 1998.

3. मुखर्जी, प्रो० सुब्रत एवं रामास्वामी, डॉ० सुशीला समाजवादी चिन्तन का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय (दिल्ली विश्वविद्यालय), 1999.

4. विवेकानन्द, स्वामी वर्तमान भारत, रामकृष्ण मठ (नागपुर), 2001.

5. कलाम, ए०पी०जे० अब्दुल एवं पिल्लै, शिवताणु मेरे सपानों का भारत, प्रभात पेपर बैक्स, 2004.

6. कलाम, ए०पी०जे० अब्दुल तेजस्वी मन महाशक्ति भारत की नींव, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2005.

7. कृष्णमूर्ति, जे०: शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट, वाराणसी-2005.

8. मोहम्मद, डॉ० नूर एवं लवानिया, डॉ० एम०एम०: भारतीय समाज (विस्तृत अध्ययन), कॉलेज बुक डिपो (जयपुर), 2009.

9. पाण्डेय, नवीन शंकर: मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में विधि एवं दण्ड विधान (एक तुलनात्मक अध्ययन), VL Media Solutions (New Delhi, 2010.

10. नेहरू, जवाहरलाल (सम्पादक रामचन्द्र टण्डन), हिन्दुस्तान की कहानी, सं० साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013.